RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-3 • अंक-10 • त्रैमासिक • अप्रेल-जून, 2015

Scanned by CamScanner

परिवार मूल्य, शिक्षा की नींव

डॉ. आभा सिंह, गिरधारी लाल शर्मा

परिवार बच्चे के जीवन को प्रभावित करने वाली सबसे पहली और महत्वपूर्ण संस्था है। इसका प्रभाव प्राथमिक, स्थायी और आंतरिक होता है। परिवार मानव जीवन के सांस्कृतिक विकास के प्रत्येक स्तर पर किसी न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है। इस दृष्टि से परिवार एक सार्वभौमिक और सार्वकालिक संस्था रही है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, पूर्व का हो या पश्चिम का परिवार एक मौलिक संस्था रही है। जन्मते ही बालक परिवार का सदस्य बन जाता है। परिवार ही मुख्यतः उसका समाजीकरण करता है, उसे मानव बनाता है और समाज को समर्पित कर देता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक साधारणतः व्यक्ति परिवार का सदस्य बना रहता है। इसे मानव का एक लघु समुदाय कहा जा सकता है।

सभी छोटे-बड़े समुदायों/संगठनों के परिवार सबसे अधिक सार्वभौम है। यह सभी समाजों और कालों में पाया किसी न किसी परिवार का सदस्य अवश्य रहा है और भविष्य में भी रहेगा। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर परिवार पाया जाता है। प्रत्येक प्रकार के समाज में चाहे वह सभ्य हो अथवा असभ्य, आदिम हो अथवा आधुनिक, ग्रामीण हो अथवा नगरीय परिवार का अस्तित्व सदैव रहा है।

परिवार के सदस्य भावात्मक आधार पर एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहते हैं। पति-पत्नी के बीच घनिष्ठ प्रेम, माता-पिता में अपनी संतान के प्रति वात्सल्य और त्याग, संतान में अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति प्रेम, श्रद्धा और आदर के भाव पाये जाते हैं। परिवार व्यक्ति का प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। परिवार का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह बालकों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके जीवन को संस्कारित करता है। उन पर अमिट छाप डालता है। उसके व्यक्तित्व के निर्माण में योग देता है। यदि परिवार का वातावरण प्रेम, सहयोग, सहानुभूति से परिपूर्ण है। घर के बड़े छोटे से स्नेह रखते हैं तथा छोटे बड़ों का सम्मान करते हैं। उन परिवारों के बच्चों में समायोजन, सहानुभूति, प्रेम जैसे गुणों का विकास स्वतः ही

Scanned by CamScanner

होता जाता है। इस प्रकार के परिवारों के बच्चों को भविष्य में समाज या कार्यस्थल पर समायोजन की समस्या नहीं आती है।

इसके विपरित जिन परिवारों में कलह द्वेष ईर्ष्या के कारण परिवार का वातावरण प्रायः क्षुब्ध रहता है। उन परिवारों के बालकों में मूल्यों का अभाव पाया जाता है। इस प्रकार के वातावरण वाले परिवारों के बालक प्रायः अपराधी प्रवृत्ति के बन जाते हैं। इनमें मानवीय संवेदनाओं की कमी पायी जाती है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। भारतीय परिवारों में सदस्यों के पारस्परिक संबंधों का बालकों के व्यक्तित्व शिक्षा, भावनाओं तथा शिक्षा उपलब्धियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। बच्चों के आचरण में उसके परिवार का वातावरण झलकता है। बच्चा कैसा आचरण करे इसका निर्णय अनौपचारिक रूप से माता-पिता, समाज के बड़े-बूढ़े करते हैं। प्रारम्भिक सात वर्ष की अवस्था तक बालक की तार्किक शक्ति जाग्रत नहीं हो पाती। इस समय वह अनुकरण करना सीखता है। अतः वह कैसा आचरण करे, इसे उसके माता-पिता, अध्यापक व अन्य लोग सीधे बतलाते हैं। जब कोई आचरण बार-बार किया जाए तो वह आदत बन जाता है। अतः आदतों के निर्माण में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

आज मूल्यों का तेजी से पतन हो रहा है। आज न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में मूल्यों के महत्व को समझने, उनको व्यवहार व कार्य में अमल में लाने की आवश्यकता है।

भारत जैसे देश में जहां मूल्यों पर विशेष जोर दिया जाता है। वहां मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। युवा पीढ़ी स्वतन्त्रता, नवाचार, भोगवाद, आनन्द चाहती है जबकि उनके माता-पिता या दादा-दादी की पीढ़ी परम्परागत, समाजीकरण, नियंत्रण तथा अधिकार को चाहते है। फलस्वरूप पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों में संघर्ष प्रारम्भ हो गया है। बदलते सामाजिक वातावरण में परिवारों के स्वरूप भी बदल रहे हैं। एकल परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है तथा सामाजिक मूल्यों में भी परिवर्तन हो रहा है। बालकों के पालन-पोषण के तरीकों पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है।

यह सर्वविदित है कि कोई बालक अथवा व्यक्ति किसी एक विशिष्ट समय में जो भी कुछ होता है, वह इसका परिणाम होता है कि जीवन के आरम्भ मे वह किस वातावरण में था। उसने उस परिवेश से क्या सीखा तथा बाद के अनुभवों से उसने क्या सीखा है? साथ ही भविष्य में वह क्या होगा, यह संभावना भी इसी बात पर निर्भर करती है कि उसका पारिवारिक परिवेश कैसा था तथा उसके पश्चात किस प्रकार के अनुभव एवं अवसर उसे प्राप्त होते हैं तथा किस प्रकार उसमें निहित संभावनाओं का विकास होता है।

एक बीज में फल-फूल, पत्तियों तथा अन्य बीजों को उत्पन्न करने की क्षमता एवं सम्भावना निहित होती है। परन्तु यह तभी साकार होगा जब उसे पानी, गर्मी, खाद, हवा उपयुक्त मात्रा में और ठीक समय पर मिलती रहे। इसी प्रकार बालक में निहित विकास की संभावनाओं का विकास भी तभी हो पाता है जब वांछनीय एवं उपयुक्त वातावरण की परिस्थितियां उपलब्ध हो। अन्तनिर्हित शक्तियाँ तब तक जागृत एवं विकसित नहीं होगी जब तक की परिस्थितियों के माध्यम से उन्हें उत्तेजित एवं क्रियारत नहीं किया जाता। वातावरण ही बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित रूप प्रदान करता है। परन्तु कोई भी ऐसा विकास वातावरण के माध्यम से भी संभव नहीं होता जो बालक के मूल स्वभाव में निहित न हो। इस प्रकार ये दो तत्त्व आंतरिक एवं बाह्य आनुवांशिकता एवं वातावरण/ बालक के विकास में वातावरण के कारण बच्चें में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसके कारण वह अपना प्रत्येक कार्य उत्साहपूर्वक करने का प्रयास करता है। अपनी रूचि के कार्य करने से पढ़ाई के कारण होने वाली नीरसता कम हो जाती है। जिससे वह दुश्चिंता, कुण्ठाओं और हीन भावनाओं से ग्रस्त होने से बचता है।

वर्तमान में किशोरों में समायोजन की क्षमता का अभाव देखा जा रहा है। विद्यालयों में कक्षा 10 से 12 तक के विद्यार्थियों में समायोजन की क्षमता कम होती दिखाई

Scanned by CamScanner

दे रही है। यह वर्ग अध्यापकों की बात व परिवार की बात अनसुनी कर देते हैं। छोटी-छोटी बात पर आपस में झगड़ा कर लेते हैं। इसी आयु में नशा की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। उच्च आकांक्षा रखते हैं तथा मन के अनुरूप परिणाम न मिलने पर घर छोड़ कर भाग जाते हैं अथवा आत्महत्या तक कर लेते हैं। बोर्ड का परीक्षा-परिणाम घोषित होता है तो दूसरे दिन के समाचारों में कई विद्यार्थियों की आत्महत्या की खबरे प्रकाशित होती हैं।

बदलते सामाजिक वातावरण में परिवार के स्वरूप भी बदल रहे हैं। एकल परिवार की संख्या लगातार बढ़ रही है। आजकल बहुत से परिवार एकाकी परिवार बनकर ही अलग-अलग रहना चाहते हैं, जिसमें बच्चों का लालन-पालन अधिक उन्मुक्त वातावरण में हो सके। लेकिन एकाकी परिवारों में भी कई बार सूनापन रहता है। विशेषकर जबकि पति-पत्नी दोनों ही बाहर नौकरी करने जाते हैं। ऐसे परिवारों में किसी बड़े-बूढ़ों या अन्य सगे-सम्बन्धियों के न होने के कारण बालकों का न तो स्वस्थ सामाजिक विकास हो पाता है और न ही उनके ज्ञान की समुचित अभिवृद्धि हो पाती है। इस प्रकार के एकाकी परिवारों के बच्चों में उद्‌ण्डता, कुसमायोजन, मूल्यों का अभाव आदि पाया जा रहा है।

मानव के जीवन में मूल्यों का महत्व अधिक है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित होता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही सीखने लगता है और धीरे-धीरे अपने अंतर में ग्रहण कर लेता है। यदि उसका पालन पोषण उत्तम वातावरण में हुआ है जहां उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते हैं तो वह उन्हें ही अपने अंतर में समाहित कर लेता है और यदि ऐसा नहीं है तो या तो वह किन्ही भी मूल्यों को ग्रहण कर पाता है या निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन का आधार बना लेता है। मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने तथा उन्हें आत्मसात करने में परिवार का बहुत बड़ा योगदान है। अतः माता-पिता, परिवार का उत्तरदायित्व है कि बालकों को एकस्वस्थ पारिवारिक वातावरण उपलब्ध कराएं जिससे बालक में अच्छे मूल्यों का विकास हो सकेगा तथा उसमें आत्मविश्वास जागृत हो सकेगा।

संदर्भ सूची -

1. जोशी, स्नेहा, एम.के. पुष्पेन्द्रक (2002), वेल्यू बेस्ड लीडरशीप इन एजूकेशन, अनमोल पब्लिकेशन प्रा. लि., नई दिल्ली
2. शर्मा, योगेन्द्र के. (2005), साइकोलोजिकल फिलासफी ऑफ एज्यूकेशन, कनिष्क पब्लिसर्श, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
3. हेमलता तलसेरा (1995), स्कूल प्रोग्राम शुड बी. ह्यूमन वेल्यू आरियेन्टेड, आल इण्डिया फेडरेशन आफ एजूकेशन एसोसिएशन, उदयपुर
4. प्यारेलाल चौधरी (2010), मूल्य शिक्षा, नया शिक्षक, अप्रैल-जून 2010

सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

♦ ♦ ♦

Scanned by CamScanner